प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आचार्यश्री महाश्रमण का नवनिर्मित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

सरदारशहर 16 जुलाई , 2010

आचार्य महाश्रमण ने प्रातः 8 बजे श्रीसमवसरण से विहार कर एक भव्य जुलूस के साथ नवनिर्मित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश किया। भव्य जुलूस में तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल, अणुव्रत समिति आदि अनेक संस्थाओं के अलावा शहर की विभिन्न स्कूलों के बच्चे, कार्यकर्त्ता, ज्ञानशाला के बालक-बालिकाएं अपने अपने गणवेश में सम्मलित थे। जुलूस मैन मार्केट, दूगड़ विद्यालय रोड आदि शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए तेरापंथ भवन पहुंचा। प्रवेश के पश्चात कार्यक्रम आयोजित हुआ और उसके पश्चात सामुहिक भोज भी आयोजित किया गया।

आचार्य महाश्रमण के मंगल प्रवेश के साथ ही दूगड़ विद्यालय सम्मुख नवनिर्मित विशाल तेरापंथ भवन का उद्घाटन भी किया गया।

भवन उद्घाटन के अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के कोषाध्यक्ष राजनकरण सिरोहिया ने भवन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए पूरे सरदारशहर की जनता के सहयोग की सरहाना की। चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भवन निर्माण में मुख्य रूप से आर्थिक योगदान के रूप में हमारे परिवार को जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इसकी प्रेरणा मेरे परिवार वालों की रही तथा जो सहयाग दिया और उसे फाउण्डेशन से स्वीकार किया उसके लिए भी उन्होंने महाप्रज्ञ अध्यात्म एण्ड एजूकेशनल फाउण्डेशन का धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्थानी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने सभा व संपूर्ण सरदारशहरवासियों की तरफ से अभिनन्दन करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

महाप्रज्ञ अध्यात्म एजूकेशनल फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुरेन्द दूगड़ ने भवन से जुड़े 51 ट्रस्टियों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर उनका सम्मान किया।

स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सूरज बरड़िया ने अपना स्वागत भाषण दिया। आभार ज्ञापनत जीतेन्द्र नाहटा किया।

धर्म दुनिया में परम मंगल है : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमण ने नवनिर्मित तेरापंथ भवन के विशाल प्रांगण में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए अपने दैनिक प्रवचन में कहा कि धर्म दुनिया में परम मंगल है, जिसका धर्म में मन लगा रहता है उसे देवता भी प्रणाम करते हैं, जहां अनुकंपा है वहां अहिंसा है, जहां संयम है वहां मंगल है। उन्होंने कहा कि तपस्या मंगल है कठोर जीवन जीने का अभ्यास भी साधु संत में होता है किंतु एक गृहस्त भी कठोर जीवन जीने का अभ्यासी बने।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि हम नवनिर्मित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश के लिए आए हैं किंतु हमारा इसमें कोई स्वामित्व नहीं है, क्योंकि साधु अकिंचन होता है, अनगार होता है साधु के पास कोई संपति नहीं होती और जो अकिंचन होता है वह तीन लोक का मालिक होता है, साधु भवन, पैसे में लिप्त नहीं होता जिस तरह से कमल पानी में रहते हुए पानो में लिप्त नहीं होता उसी तरह साधु को भी निर्लिप्त रहना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि इस भवन में 2 जून को गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञजी का प्रवेश होना था, किंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था अच्छा होता मैं उन्हें हाथ सहारा देकर उनके साथ आता किंतु अब मैं किसको सहारा दूं उनके महाप्रयाण के बाद हमने 2 जून की जगह समय भी तय किया 16 जुलाई को आज प्रवेश किया है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि भवन निर्माण में भी कितनों का योगदान लगा है। किसी कार्य का संकल्प हेाता है, समर्पण होता है तब कोई कार्य संपन्नता की दिशा में आगे बढ़ता है। कल्पना करना कोई बुरा नहीं है अच्छा है कल्पना फिर आकार को ग्रहण करती है और हमारे सामने आती है। सरदारशहर में 1998 का चातुर्मास था उस समय से कल्पना चल रही थी आज 12 वर्षों बाद यह कल्पना साकार हुई है। कितनों का योग साथ में होता है तो समाज के लिए अच्छा काम किया जा सकता है, समाज के लिए भवन की उपयोगिता भी होती है। जैसी समाज की भावना लगी उसी चिंतन निर्णय के अनुसार हम यहां पहुंचे हैं। यहां साधना भी चले साथ में जनता को लाभ मिले, चातुर्मास निष्पतिपूर्वक हो सकता है। हम यहां आए हैं इसी तरह विभिन्न सिंघाड़ों ने अपने-अपने क्षेत्रों में चातुर्मासिक प्रवास किया है और कुछ कर रहे हैं उन सभी साधु-साध्वियों के प्रति मैं चातुमास की मंगल कामना करता हूं।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दूगड़ कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि 17 जुलाई को प्रात: आचार्य महाश्रमण का नागरिक अभिनन्दन समारोह आयोजित होगा। इसमें शहर की सभी जैन-अजैन लगभग 45 संस्थाओं के द्वारा अभिनन्दन किया जायेगा।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)